तृतीय अध्याय

शोध प्रविधि तथा प्रक्रिया

अध्याय–तृतीय

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

3.1 प्रस्तावना–

अनुसंधान कार्य की सही दिशा की ओर अग्रसर होने के उद्देश्य से यह आवश्यक होता है कि शोध प्रबंध की व्यवस्थित रूपरेखा तैयार की जाए क्योंकि यह रूपरेखा ही शोध कार्य को एक निश्चित दिशा प्रदान करती है।

वास्तव में अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ज्ञात किया जाता है। अनुसंधान प्रश्न करना, जांच करना, निरीक्षण करना, योजनाबद्ध अध्ययन करना, उद्देश्य बनाना तथा सामान्यीकरण की प्रक्रिया है।

3.2 जनसंख्या–

प्रस्तुत शोध मे शोधकर्ता द्वारा अध्ययन के लिए जनसंख्या के रूप में नवमीं कक्षा के विद्यार्थियों को लिया गया है।

3.3 न्यादर्श –

किसी भी अनुसंधान में न्यादर्श चयन की आवश्यकता होती है क्योंकि किसी भी शोधकार्य में यह संभव नहीं हो पाता कि सभी लक्ष्यगत समष्टि को अध्ययन में शामिल किया जाये। अतः समष्टि की समस्त इकाईयों में से अध्ययन हेतु कुछ इकाईयों को एक निश्चित विधि द्वारा चुन लिया जाता है। उन संकलित इकाईयों के समूह को न्यादर्श कहते है।

''न्यादर्श जनसंख्या में से चुना गया कोई भाग या जन समूह होता है जो जनसंख्या के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है।''

3.4 न्यादर्श का चयन–

बोगार्डस (1954) के अनुसार : पूर्व निर्धारित योजनानुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की ईकाइयों का चयन ही प्रतिदर्श चयन प्रक्रिया है।

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के चयन हेतु शोधकर्ता द्वारा छिन्दवाड़ा जिले के पांढुर्णा तहसील में स्थित दो शासकीय विद्यालयों को चुना गया। इन विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। अध्ययन के लिए एक ग्रामीण तथा एक शहरी विद्यालय को चुना गया।

(1)ग्रामीण विद्यालय – शासकीय संजय गांधी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तीगांव

(2)शहरी विद्यालय – शासकीय लाल बहादुर शास्त्री उत्कृष्ट विद्यालय पाढुंर्णा को चुना गया।

दोनों ही विद्यालय मे शोधकर्ता द्वारा सर्वप्रथम प्राचार्य को संस्थान से प्राप्त शोधकार्य पत्र के आधार पर अपने आने का उद्देश्य बताते हुए शोध कार्य के लिए अनुमति ली गई। इसके पश्चात कक्षा शिक्षक से सर्वप्रथम कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों की सूची प्राप्त की तथा उनका शालेय रिकार्ड द्वारा कक्षा 8वीं में उपलब्धि प्रतिशत प्राप्त किया गया। इस प्रकार न्यादर्श के रूप मे विद्यार्थियों का चयन **Non Probability judgemental** विधि से किया गया। क्योंकि शोध मे अध्ययन के लिए दोनों ही विद्यालयों के कक्षा 9वी के ऐसे विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप मे किया गया जिनकी उपलब्धि कक्षा 8वी में 60 प्रतिशत से कम तथा 70 प्रतिशत से अधिक थी।

इस प्रकार दोनो ही विद्यालयों मे प्रतिदर्श के रूप में उपस्थित विद्यार्थियों की उपलब्धि को निम्न प्रकार से दर्शाया गया है–

प्रतिदर्श का विवरण –

क्र.	संदर्भ क्षेत्र	विद्यालयों का नाम	उच्च उपलब्धि छात्र संख्या	निम्न उपलब्धि छात्र संख्या	कुल
1.	ग्रामीण	शास.सं.गां.उ.मा. विद्यालय तीगांव	18	22	40
2.	शहरी	शा. लाल बहा.शा. उत्कृष्ट विद्यालय पांढुर्णा	30	20	50
				योग	90

3.5 शोध मे प्रयुक्त चर –

चर किसी घटना किसी, प्रक्रिया का वह पक्ष था स्वरूप है जो अपनी उपस्थिति से किसी दूसरी घटना या प्रक्रिया को जिसका अध्ययन किया जा रहा है प्रभावित करता है।

शोध के मुख्य चर –

1. विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति
2. शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सह संबंध का अध्ययन किया गया है।

3.6 शोध अभिकल्प –

शोधकर्ता द्वारा किया गया शोध अध्ययन सहसंबंधनात्मक अध्ययन है।

3.7 शोध मे प्रयुक्त उपकरण –

अनुसंधान में नवीन तथ्य संकलित करने हेतु अथवा नवीन क्षेत्र का उपयोग करने हेतु परीक्षणों की आवश्यकता होती है। इन्हीं यंत्रो को उपकरण कहते हैं।

उपरोक्त बिन्दुओं का ध्यान रखते हुए शोधकर्ता द्वारा विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति और उपलब्धि के मध्य सहसबंध को जानने के लिये प्रमाणीकृत उपकरण **"विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति इन्वेटरी"** का प्रयोग किया है।

1. विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति इन्वेटरी –

कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति को जानने के लिए राव द्वारा विकसित विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति इन्वेंटरी (School Attitude Inventory) का प्रयोग किया गया है जो 13 से 16 वर्ष तक के बच्चों के लिए है। इसमें कुल 30 प्रश्न हैं।

प्रत्येक प्रश्न के पांच विकल्प हैं। Roa's School Attitude Inventory पांच बिन्दुओं (पूर्ण सहमत, सहमत, संदिग्ध, असहमत, बिल्कुल असहमत) में विभाजित है।

Inventory विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति को दर्शाती है । इस इन्वेन्टरी में कुल 30 प्रश्न हैं जिनमें 15 प्रश्न सकारात्मक तथा 15 प्रश्न नकारात्मक अभिवृत्ति को दर्शाते हैं । सकारात्मक प्रश्नों के अंकों का विभाजन–

1. पूर्ण सहमत (5 अंक)
2. सहमत (4 अंक)
3. संदिग्ध (3 अंक)
4. असहमत (2 अंक)
5. बिल्कुल असहमत (1 अंक)

नकारात्मक प्रश्नों के अंकों का विभाजन –

1. पूर्ण सहमत (1 अंक)
2. सहमत (2 अंक)
3. संदिग्ध (3 अंक)
4. असहमत (4 अंक)
5. बिल्कुल असहमत (5 अंक)

परीक्षण के अंको के निर्धारण के आधार पर विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति के दो वर्ग है।

1. सकारात्मक अभिवृत्ति
2. नकारात्मक अभिवृत्ति

2. शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना –

शैक्षिक उपलब्धि को जानने के लिए विद्यार्थियों का कक्षा 8वीं का वार्षिक परिणाम (सभी विषयों के कुल प्राप्तांक) शालेय रिकार्ड से लिया गया।

3.8 प्रदत्तों के संकलन की प्रक्रिया –

जनवरी माह के द्वितीय सप्ताह में शोधकर्ता द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया गया। शोधकर्ता द्वारा सर्वप्रथम चयनित विद्यालय के प्राचार्य से परीक्षण के लिए अनुमति आवेदन द्वारा ली गई। स्वीकृति मिलने पर सर्वप्रथम ग्रामीण शास0 विद्यालय तीगांव में परीक्षण द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया गया। प्रदत्तों का संकलन शोधकर्ता की स्वंय की उपस्थिति मे किया गया जिसमें एक दिन का

समय लगा। इसके पश्चात शहरी क्षेत्र उत्कृष्ट विद्यालय पांढुर्णा के प्राचार्य से शोधकर्ता द्वारा परिक्षण के लिए अनुमति ली गई। वहाँ से प्रदत्तों के संकलन से पहले शोधकर्ता द्वारा अपना परिचय विद्यार्थियों को दिया गया और अपने आने का उद्देश्य बताया गया। परीक्षण से संबंधित विद्यार्थियों को निम्न जानकारी दी गई।

1. परीक्षण का आपकी वार्षिक परीक्षा से कोई संबंध नहीं है। अतः पूछे गये सभी प्रश्नो का उत्तर निसंकोच बिना डर, भय के दें।
2. परीक्षा परिणाम पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा।
3. प्रदत्त जानकारी का उपयोग केवल अनुसंधान कार्य में ही किया जायेगा।
4. प्रदत्त जानकारी को गोपनीय रखा जायेगा।

इसके पश्चात शोध में चयनित विद्यार्थियों को इन्वेटरी वितरित की गई और निम्न निर्देश दिए गए–

1. परीक्षण मे निर्धारित स्थान पर अपना नाम लिंग, विद्यालय का नाम, कक्षा दिनांक जन्म तिथि पता आदि आवश्यक जानकारी की पूर्ति किजिए।
2. प्रश्नों के उत्तर आप अपने साथी मित्रों से न पूछे जो उत्तर आपको सही लगता है उसी उत्तर पर प्रश्न के सम्मुख सही का निशाने लगा दीजिये।
3. समय सीमा का बंधन नहीं है लेकिन जल्दी करने का प्रयास करें।
4. अगले पृष्ठ पर आपके स्कूल के संबंध मे 30 प्रश्न दिए गए हैं।
5. प्रत्येक प्रश्न को सावधानी से पढिए। आपको अपने उत्तर पूर्ण सहमत, सहमत, संदिग्ध असहमत व बिल्कुल असहमत में देने है।
6. सभी सवालो के जवाब देना अनिवार्य है।
7. कोई भी सवाल सही या गलत नही है ।

3.9 प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ –

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु कार्ल पियर्सन प्रोडक्ट मोमेण्ट विधि का प्रयोग किया गया।